

तीर्त्रं (तीर्त्र UGÉVAL. zu UNĀDIS. 2, 28) 1) adj. f. झा *streng, heftig, stark, scharf, stechend, intensiv*: दशन (einer Schlange) BHARTṢ. 2, 77. दहन 3, 19. BRAHMA-P. 58, 17. दिवाकरकिरण VARĀH. BRH. S. 21, 24. SÜRJAS. 12, 8. ÇĀK. 104. रोषतीर्त्रेण चनुषा R. 3, 62, 11. सोम RV. 1, 23, 1. 108, 4. 6, 47, 1 u. s. w. VS. 19, 1. ĀḠV. ÇR. 9, 7. PAÑĀV. BR. 18, 5. KĀTJ. ÇR. 10, 5, 9. रस AV. 3, 13, 5. 10, 2, 11. धन्वना तीर्त्राः समेदा जयेम RV. 6, 73, 2. दण्ड (Strafe) R. 2, 106, 8. अत्रा वो नृत्यतामिव तीर्त्रो रूणुषोपयत RV. 10, 72, 6. MBH. 6, 2377. घोषाः RV. 6, 73, 7. शब्द MBH. 8, 2508. R. 1, 44, 17. तमस् ARG. 8, 13. अतितीर्त्रमभूद्युद्धम् MBH. 7, 6893. व्रण 13, 3. 1876. आम्य JĀGĀ. 3, 245. रजः HARIV. 10856. तीर्त्ररज adj. SUÇR. 1, 18, 4. तीर्त्ररुज 300, 16. अतिरि RĀGĀ-TAR. 6, 44. वेदना SUÇR. 1, 18, 15. AK. 1, 2, 2, 3. H. 1358. भी ARG. 8, 16. VARĀH. BRH. S. 11, 23. BHĀG. P. 6, 10, 30. क्रोध R. 6, 80, 19. रोष 1, 60, 19. N. 11, 33. शोक 13. 24, 8. अयम् MBH. 6, 2379. अभिषङ्ग SĀH. D. 76, 4. तपस् MATSĀP. 3. KATHĀS. 4, 22. नियमाः R. 2, 22, 23. संग्रह MBH. 13, 2223. विक्रम SUND. 2, 7. संवेग JOGAS. 1, 21. पत्र RAGH. 5, 48. चित्ता BHĀG. P. 6, 18, 58. वैरानुबन्धतीर्त्रेण ध्यानेन 7, 1, 46. भक्ति 3, 27, 21. 2, 3, 10. मुद् 6, 4, 41. वृष्टि VARĀH. BRH. S. 88, 9. तीर्त्रतरमानुनासि-क्यमनुस्वोरात्मेषु Ind. St. 4, 126. नातितीर्त्रेण कर्मणा *mit nicht allzu-grosser Anstrengung, mit leichter Mühe* MBH. 2, 1067. सर्पाणां दर्शनं ती-र्त्रं (so ist zu lesen), स्वप्नानां च निशात्तये *schrecklich, grässlich* HARIV. 4256. न हि तीर्त्रतरं किंचिदनुतादिकृ विद्यते MBH. 1, 3097. मन्त्र VID. 94. ० फल *schlimme Folgen* VARĀH. BRH. S. 11, 17. 26. तीर्त्रीकर ÇAT. Br. 1, 7, 4, 18. 6, 4, 6. 3, 8, 2, 30. तीर्त्रीभू RĀGĀ-TAR. 6, 99. तीर्त्र = नितान्त, अत्य-र्थ AK. 1, 1, 4, 62. TRIK. 3, 3, 354. H. 1303. an. 2, 428. MED. r. 45. = उल्ल, अत्युल्ल H. 1383. H. an. MED. = कटु TRIK. H. an. MED. — 2) m. a) *Schürfe u. s. w.*: घृतस्य P. 2, 2, 8, VĀRTI. 3, Sch. — b) *viell.* = तीव्र 1: तीर्त्राणां विषयो देशः gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 53. — c) Bein. Çiva's ÇABDAR. im ÇKDR. — 3) f. झा a) N. verschiedener Pflanzen: a) *Helle-borus niger* Lin. — ß) *schwarzer Senf*. — γ) = गण्डहर्वा H. an. MED. — ð) *Basilienkraut* (तुलासी). — ε) = तरदी. — ζ) = मन्त्रायेतिष्मती RĀGĀN. im ÇKDR. — b) N. pr. eines Flusses ÇABDAR. im ÇKDR. — 4) n. a) *Ufer* (vgl. 1. तीर्). — b) *Zinn* (vgl. 2. तीर्) UNĀDIK. im ÇKDR. — c) *Eisen, Stahl* (vgl. तीर्णा) RĀGĀN. im ÇKDR. — Das Wort könnte auf 1. तर (vgl. त्रि) und auch auf 1. तु zurückgeführt werden; im ersten Falle wäre die Grundbedeutung *durchdringend*, im zweiten *mächtig*.

तीर्त्रकन्द (तीर्त्र + कन्द) eine scharfe Art von Arum NIGH. PR. तीर्त्र-काण्ड m. RĀGĀN. im ÇKDR.

तीर्त्रगन्धा (तीर्त्र + गन्ध) f. Kümmel oder *Ptychotis Ajowan* (पवान्नी) Dec. RĀGĀN. im ÇKDR. NIGH. PR.

तीर्त्रज्वाला (तीर्त्र + ज्वाला) f. *Gristea tomentosa* Roxb. (धातकी) RĀGĀN. im ÇKDR. — Vgl. अग्निज्वाला, वक्रिणिखा.

तीर्त्रता (von तीर्त्र) f. *Heftigkeit, Schärfe*: तिग्मोऽर्धुर्धते गोम्भे ऽप्यती-व्रताम् RĀGĀ-TAR. 1, 41. वेगस्य H. 780.

तीर्त्रदारु (तीर्त्र + दारु) m. ein best. Baum gaṇa राजतादि zu P. 4, 3, 154.

तीर्त्रप् (von तीर्त्र), तीर्त्रयनि *schärfen, stärken* PAÑĀV. BR. 18, 5.

तीर्त्रसव (तीर्त्र + सव) m. = तीर्त्रसुत् 2. ÇĀKH. ÇR. 14, 21, 1.

तीर्त्रसुत् (तीर्त्र + सुत्) 1) adj. wohl aus der gährenden Masse gepresst: यस्य तीर्त्रसुत् (nach SĀJ. von तीर्त्रसुत्) मद् मध्यमत्तं च रत्नसे । अयं स सोमं

इन्द्र ते सुतः पिबं RV. 6, 43, 2. अयं तीर्त्रस्तीर्त्रसुदिन्द्र सोमः ÇĀKH. ÇR. 14, 21, 2. — 2) m. N. eines Ekāha LĀTJ. 8, 10, 7. KĀTJ. ÇR. 8, 8, 21. 22, 9, 15. MAÇ. 4, 7 in Verz. d. B. H. 72.

तीर्त्रानन्द (तीर्त्र + आनन्द) m. Bein. Çiva's ÇIV.

तीर्त्रात् (तीर्त्र + अत्) adj. wohl am Ende (durch die Gährung) scharf —, stark werdend, vom Soma: सोमं मधुमत्तं वृष्टिवनिं तीर्त्रात् वज्रम-ध्यम् AIR. Br. 2, 20. SĀJ.: तीर्त्रमवश्यंभावि फलमते यस्य.

तीर्त्र (त्रीशट) m. N. pr. eines medic. Autors Verz. d. B. H. No. 946. fg. 941.

1. तु, तवीति (s. u. उद्) und तौति DHĀTUP. 24, 25. P. 7, 3, 95. VOP. 9, 53. तूताव NAIHU. 4, 1. P. 6, 1, 7, Sch. तोता und तविता VOP. 8, 79. 9, 53. Geltung —, *Macht haben, es zu Etwas bringen. valere*: यस्मि त्प्रमायज्ञसे स साधत्यन्वा वेति दधते सुवीर्यम् । स तूताव नैर्नमश्चोत्पद्यति: RV. 1, 94, 2. Die Grammatiker haben folgg. Bedd.: वृद्धि oder पूर्ति, वृत्ति oder गति, किंसा DHĀTUP. SIDDH. K. zu P. 7, 3, 95. Davon तवस् u. s. w., तुवि, तूप. — caus. तूतोत् in Kraft —, in Wirkung setzen, zur Geltung bringen: ब्रह्मा तूतोदिन्द्रो गातुमिलन् !: V. 2, 20, 5. सूत्रा शंसं यज्ञमानस्य तूतोत् 7. तं तुर्वि गृणात्तमिन्द्र तूतो: 6, 26, 4.

— उद् es zu Etwas bringen, Etwas vermögen: अथ च्यवान् उत्तवी-त्यर्थम् RV. 10, 39, 1.

— सम् intens. Etwas vermögen, durchführen: क्रतुं दधिक्त्वा अनु संत-वीवत् RV. 4, 40, 4; vgl. Nir. 2, 28.

2. तु part., die niemals am Anfange eines Verses oder Satzes steht; Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8, 1, 39. 56. 1) auffordernd doch, nun; so ist das Wort im Veda gebraucht, ähnlich wie das latein. dum, besonders häufig beim imperat.: आ वेता नि धीदत RV. 1, 3, 1. 3, 41, 1. 4, 32, 1. 8, 70, 1. पिब त्वस्य 3, 51, 10. आ तु (P. 6, 3, 133) गच्छि प्र तु क्रव 8, 13, 14. 71, 4. 9, 87, 1. तं तू न इन्द्र तं रूपि दा: 1, 169, 4. स तू नौ अग्नि-र्नयतु 4, 1, 10. 5, 2, 7. विद्धी त्वस्य नौ वसो 7, 31, 4. महतो यद्ध वो रुवा-महे । आ तू न उयं गतन 8, 7, 11. 32, 24. 10, 101, 10. — 2) aber: चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपन् तु सः AV. 4, 18, 6 (die einzige Stelle für तु im AV.). न किञ्चित्, प्र तु जनयति TS. 1, 7, 2, 4. KĀTJ. ÇR. 1, 3, 7 u. s. w. आ-चाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते । आचारेण तु संयुक्तः संपूर्णफलभागभ-वेत् ॥ M. 1, 109. 2, 24. निमेषा दश चाष्टौ च काष्ठा त्रिंशन्नु ताः कला । त्रिं-शत्कला मुहूर्तः स्यादहोरात्रं तु तावतः ॥ 1, 64. भवत्पूर्वं चरेद्भ्रममुपनीतो द्विजात्तमः । भवन्मध्यं तु राजन्यो वैश्यस्तु भवदुत्तरम् ॥ 2, 19. ग्रामीनस्य स्थितः कुर्यादभिगच्छंस्तु तिष्ठतः । प्रत्युद्गस्य त्वात्रगतः पश्चाद्वायंस्तु याव-तः ॥ 196. मांसभेता तु पाषिष्कान् (द्राव्यः) प्रवास्यस्त्वस्त्रिभेदकः 8. 284. 337. ब्राह्मणां दशवर्षं तु शतवर्षं तु भूमियम् । पितापुत्रौ विवादीयाद्वाष्-णास्तु तयोः पिता ॥ 2, 135. यत्र नार्यस्तु पूज्यते — यत्रैतास्तु न पूज्यते 3, 56. स्त्रियो तु रोचमानायाम् — तस्यां त्वरोचमानायाम् 62. अनाधिके तु मरुद्धे वृकैः पाले तनायति 8, 235. यदा परबलानां तु गमनीयतमो भवेत् । तदा तु 7, 174. अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव च । अकृतः स तु विज्ञेयः 8, 199. यस्मिंस्तु दिवसे — तस्मिंस्तु दिवसे R. 1, 73, 1. त्वेव ÇAT. Br. 1, 1, 8. 3. 6, 4, 19 (wo so zu lesen). 13, 4, 2, 4. 5, 2, 5. 14, 1, 4, 26 u. s. w. M. 8, 143. 276. 9, 84. 10, 94. 95. DAÇ. 1, 8. तु वै (vgl. त्वै) M. 2, 22. तु वाव s. u. त्वाव. कामम् (कामं तु) — तु, न तु s. u. कामम् 2; किं तु s. u. किम् 2, 1; अयि तु (s. u. अयि 14) wohl aber, sondern R. 4, 30, 17. DAÇAK. in BRNH.